प्रतिमान

# दलित-आदिवासी वोट बैंक का मिथक

राहुल वर्मा और ज्योति मिश्रा

अनुवाद : अरुण कुमार त्रिपाठी

2014

इस लेख में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के राजनीतिक और मतदान संबंधी व्यवहार के अध्ययन की कोशिश की गयी है। इन समुदायों की राजनीतिक प्राथमिकताएँ तमाम राजनीतिक दलों के चुनावी परिणामों और प्रदर्शनों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शुरुआत से ही ये दोनों समूह कांग्रेस के लिए एक साथ वोट करते रहे हैं। अस्मिताओं की राजनीति के उभार और दलीय प्रणाली के क्षेत्रीयकरण के साथ अनुसूचित जातियों और जनजातियों के चुनावी व्यवहार और राजनीतिक चयन में बदलाव हुआ है। कई राज्यों में यह समूह उन क्षेत्रीय दलों को वोट देने लगे हैं जिन्हें वे अपनी जाति और समुदाय का प्रतिनिधि मानते हैं। रोचक बात यह है कि ये समुदाय अपने भीतर भी समरूप नहीं हैं, बल्कि वे अलग तरह से वोट देते हैं और अलग-अलग पार्टियों का चयन करते हैं। यह लेख लोकसभा और विधानसभाओं में उन सीटों के आरक्षण की संक्षिप्त चर्चा के साथ शुरू होता है जहाँ से सिर्फ़ अनुसूचित जाति और जनजाति के उम्मीदवार लड़ सकते हैं। इसका दूसरा हिस्सा आरक्षित क्षेत्रों में राजनीतिक दलों के प्रदर्शन की चर्चा करता है और पिछले कई वर्षों में मतदान की पद्धति में आये बदलाव का वर्णन करता है। अगला हिस्सा 1971 से अब तक इन समुदायों की राजनीतिक प्राथमिकताओं को और 2014 के लोकसभा चुनाव में सम्भावित परिवर्तन रेखांकित करता है।

## चुनाव-क्षेत्रों का आरक्षण

2011 की मतगणना के अनुमान के अनुसार भारत के ग़रीबों में बड़ी संख्या अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों की है। अनुसूचित जनजातियाँ भारत की कुल आबादी की 8.6 प्रतिशत हैं, लेकिन इस देश के कुल ग़रीबों में उनकी हिस्सेदारी 14 प्रतिशत के क़रीब बैठती है। इसी तरह अनुसूचित जातियाँ कुल आबादी की 16.6 प्रतिशत हैं लेकिन ग़रीबी में उनका हिस्सा 27 प्रतिशत है।

ये समूह ऐतिहासिक तौर पर तमाम अवसरों और अधिकारों से वंचित रहे हैं, इसलिए भारत के संविधान में इनके लिए कई तरह के आरक्षणों और अन्य विशेष सुविधाओं का प्रावधान किया गया है। अनुच्छेद 330 और 332 के मुताबिक़ लोकसभा और विधानसभाओं में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए चुनावी क्षेत्र आरक्षित हैं। आरक्षित सीटों की संख्या किसी राज्य की कुल आबादी या उसके एक हिस्से में इन समुदायों की आबादी के आधार पर की गयी है। इन क्षेत्रों में सिर्फ़ अनुसूचित जाति और जनजाति के लोग ही चुनाव लड़ सकते हैं लेकिन वोट देने का अधिकार सभी सामाजिक समूहों के मतदाताओं को है।

एक अर्ध-संवैधानिक संस्था के रूप में काम करने वाला भारत का परिसीमन आयोग अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए चुनाव क्षेत्रों का निर्धारण करता है। आज़ादी के बाद परिसीमन आयोग का चार बार गठन हुआ है— 1952, 1963, 1973 और 2002 में। चौथे परिसीमन आयोग ने चुनाव क्षेत्रों की सीमाओं की निर्धारण 2001 की जनगणना के आधार पर किया और उसकी सिफ़ारिशें 19 फ़रवरी, 2008 से प्रभावी हुईं।

भारत में आदिवासियों की आबादी मुख्यत: भारतीय भू-भाग के 20 प्रतिशत हिस्सों में फैले जंगली और पहाड़ी इलाक़ों में पायी जाती है। अतीत में विद्वानों द्वारा भारत में आदिवासियों की शिनाख़्त करने के लिए अलग-अलग मानकों का इस्तेमाल किया है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में आदिवासियों की कुल आबादी 10.4 करोड़ है।

आदिवासी क्षेत्रों की शिनाख़्त के लिए एक ही कसौटी है— आदिवासी आबादी का केंद्रीकरण। चूँकि अनुसूचित जनजातियों में भौगोलिक रूप से केंद्रित होती है इसलिए आदिवासियों की बड़ी आबादी उन्हीं इलाक़ों में रहती है जो उनके लिए आरक्षित किये जाते हैं। अनुसूचित जनजातियों के विपरीत अनुसूचित जातियों की आबादी बिख़री हुई है इसलिए परिसीमन आयोग उनके लिए दो तरह की कसौटियाँ इस्तेमाल करता है : अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटें उन्हें पूरे राज्य में फैली हई हैं। उन सीटों पर कुल आबादी के मुक़ाबले उनकी आबादी का तुलनात्मक अनुपात ज़्यादा होता है।

बेहतर समझ की ख़ातिर इस लेख में हमने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित क्षेत्रों को निम्न परिक्षेत्रों में बाँटा है :

**अनुसूचित जनजाति के आरक्षित क्षेत्रों का वर्गीकरण :**

**पूर्वोत्तर :** असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय , सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नगालैंड.

**मध्य :** बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, ओडीशा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश.

**पश्चिमी :** राजस्थान, गुजरात, गोवा, लक्षद्वीप.

**शेष भारत :** अन्य सभी राज्य

**अनुसूचित जाति के आरक्षित क्षेत्रों का वर्गीकरण :**

**पूर्वोत्तर :** असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नगालैंड

**पूर्व :** पश्चिम बंगाल, ओडीशा, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़

**उत्तर :** जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, चंडीगढ़

**पश्चिम :** राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन, दादरा नगर, लक्षद्वीप.

**दक्षिण :** आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, पुडुचेरी, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह.

1976 में संवैधानिक प्रतिबंध लगा दिये जाने के बाद लोकसभा की कुल सीटें 2026 तक नहीं बढ़ सकतीं, लेकिन 2001 की जनगणना में अनुसूचित जाति और जनजाति की आबादी बढ़ने के कारण लोकसभा में अनुसूचित जाति और जनजाति की आरक्षित सीटें बढ़ाई गयी हैं। 2008 के बाद अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों की संख्या में छह का इज़ाफ़ा (79 से 85) और अनुसूचित जनजाति की सीटों में चार का इज़ाफ़ा (41 से 45) किया गया। तालिका-1 बताती है कि लोकसभा में आरक्षित सीटों की संख्या में कितना बदलाव हुआ और तालिका-2 बताती है कि विधानसभा के लिए आरक्षित सीटों में कितना बदलाव किया गया।

## आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों में पार्टियों का प्रदर्शन

ऐतिहासिक तौर से इन दोनों समुदायों में कांग्रेस को सभी क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के वोट बड़ी संख्या में मिलते रहे हैं। इसके अलावा पूर्वोत्तर छोड़ कर बाक़ी क्षेत्रों में 2004 के चुनाव की तुलना में हर क्षेत्र में अनुसूचित जातियों में कांग्रेस के वोटों का प्रतिशत बढ़ा है। दक्षिण और पश्चिम के अनुसूचित जाति के आरक्षित क्षेत्रों में कांग्रेस का वोट प्रतिशत अच्छी तरह से बढ़ा है। 2004 में कांग्रेस को उत्तर भारत में 19.5 प्रतिशत वोट मिले थे जो 2009 के लोकसभा चुनाव में 26.8 तक पहुँच गये। इसी तरह पश्चिम में कांग्रेस के वोटों में 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। भारत के लगभग सभी क्षेत्रीय परिमण्डलों में भाजपा की हार हुई। बाक़ी क्षेत्रीय दलों ने अपन-अपने इलाक़ों में बेहतर प्रदर्शन किया, हालाँकि अनुसूचित जाति के लिये आरक्षित क्षेत्रों में बड़ा फ़ायदा कांग्रेस को मिला (तालिका-4)। कांग्रेस ने अनुसूचित जनजाति के आरक्षित क्षेत्रों में भी अच्छा प्रदर्शन किया। पूर्वोत्तर क्षेत्र में कांग्रेस के वोटों का हिस्सा 2004 के 8.9 प्रतिशत से बढ़कर 2009 में 32.0 तक पहुँच गया। लेकिन मध्य और पश्चिमी भारत में क्षेत्रीय दलों के वोटों में नाटकीय ढंग से बढ़ोतरी हुई। 2004 के चुनावों में पश्चिमी और मध्य भारत में अन्य पार्टियों के वोटों का हिस्सा क्रमश: 10.2 और 23.2 प्रतिशत था जो कि 2009 में क्रमश: 21.7 और 29.0 प्रतिशत तक चला गया। (तालिका-5 और 6)

## अनुसूचित जातियों में मतदान का पैटर्न

कांग्रेस को अनुसूचित जाति के वोटों का अच्छा हिस्सा मिलता रहा था। लेकिन भारतीय राजनीतिक और दलीय प्रणाली के बदलते स्वरूप के कारण अनुसूचित जाति से कांग्रेस का वोट घटने लगा। नयी पार्टियों के मैदान में आने से दलित वोट खिसकने लगा। उदाहरण के लिए 1960 के दशक के आख़िरी दौर में रिपब्लिकन पार्टी ऑफ़ इण्डिया (रिपाइं) का उभार हुआ। इसी प्रकार 1977 से दलित वोट कांग्रेस और जनता पार्टी (बाद में जनता दल) के बीच बँटने लगे। अस्सी के दशक में बसपा के मैदान में आने से अनुसूचित जाति के मतदाता कई राज्यों में बसपा को वोट देने लगे। अपने उदय के साथ बसपा को राष्ट्रीय स्तर पर चार प्रतिशत वोट मिलने लगे, लेकिन दलितों में उनके वोटों का अच्छा प्रतिशत रहा। 2004 के आम चुनावों में बसपा को अनुसूचित जाति समुदाय के 19 प्रतिशत वोट मिले और 2009 के लोकसभा चुनावों में इसमें एक प्रतिशत का इज़ाफ़ा हुआ (तालिका-3 और 4)। भारतीय राजनीति के क्षेत्रीयकरण ने विभिन्न राज्यों में दलित-मतदान की अलग तस्वीर पेश की। क्षेत्रीय दलों के उदय ने भी समाज के विभिन्न तबक़ों के राजनीतिक चयन को प्रभावित किया। इसी तरह दलित वोट भी विखण्डित हो गये और वे राज्यों की उन पार्टियों को वोट देने लगे जिन्हें वे मानते थे कि वे उनके हितों की रक्षा करेंगी।

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 122



**तालिका-1**

लोकसभा में आरक्षित सीटें

| राज्य | सीटों की संख्या | परिसीमन से पहले | | परिसीमन के बाद | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | अ. जाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें | अ.जा. की आरक्षित सीटें | अ. जनजाति की आरक्षित सीटें |
| आंध्र प्रदेश | 42 | 6 | 2 | 7 | 3 |
| अरुणाचल प्रदेश | 2 | – | – | – | – |
| असम | 14 | 1 | 2 | 1 | 2 |
| बिहार | 40 | 7 | – | 6 | – |
| छत्तीसगढ़ | 11 | 2 | 4 | 1 | 4 |
| गोवा | 2 | – | – | – | – |
| गुजरात | 26 | 2 | 4 | 2 | 4 |
| हरियाणा | 10 | 2 | – | 2 | – |
| हिमाचल प्रदेश | 4 | 1 | – | 1 | – |
| जम्मू-कश्मीर | 6 | – | – | – | – |
| झारखण्ड | 14 | 1 | 5 | 1 | 5 |
| कर्नाटक | 28 | 4 | – | 5 | 2 |
| केरल | 20 | 2 | – | 2 | – |
| मध्य प्रदेश | 29 | 4 | 5 | 4 | 6 |
| महाराष्ट्र | 48 | 3 | 4 | 5 | 4 |
| मणिपुर | 2 | – | – | – | – |
| मेघालय | 2 | – | – | – | – |
| मिजोरम | 1 | – | 1 | – | 1 |
| नगालैण्ड | 1 | – | – | – | – |
| उड़ीसा | 21 | 3 | 5 | 3 | 5 |
| पंजाब | 13 | 3 | – | 3 | – |
| राजस्थान | 25 | 4 | 3 | 4 | 3 |
| सिक्किम | 1 | – | – | – | – |
| तमिलनाडु | 39 | 7 | – | 7 | – |
| त्रिपुरा | 2 | – | 1 | – | 1 |
| उत्तराखण्ड | 5 | – | – | 1 | – |
| उत्तर प्रदेश | 80 | 18 | – | 17 | – |

### तालिका-1 जारी

| राज्यों के नाम | सीटों की संख्या | परिसीमन से पहले | | परिसीमन के बाद | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | अ. जाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें | अ.जा. की आरक्षित सीटें | अ. जनजाति की आरक्षित सीटें |
| पश्चिम बंगाल | 42 | 8 | 2 | 17 | – |
| दिल्ली | 7 | 1 | – | 1 | – |
| पुडुचेरी | 1 | – | – | – | – |
| अंडमान-निकोबार | 1 | – | – | – | – |
| चंडीढ़ | 1 | – | – | – | – |
| दादर नगर हवेली | 1 | – | 1 | – | 1 |
| दमनदीव | 1 | – | – | – | – |
| लक्षदीप | 1 | – | 1 | – | 1 |
| | 543 | 79 | 41 | 84 | 47 |

### तालिका-2

राज्य विधानसभाओं में आरक्षित सीटें

| राज्य | सीटों की संख्या | परिसीमन से पहले | | परिसीमन के बाद | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | अनुसूचित जाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें |
| आंध्र प्रदेश | 294 | 39 | 15 | 48 | 19 |
| अरुणाचल प्रदेश | 60 | – | 59 | – | 59 |
| असम | 126 | 8 | 16 | 8 | 16 |
| बिहार | 243 | 39 | 0 | 38 | 2 |
| छत्तीसगढ़ | 90 | 10 | 34 | 10 | 29 |
| गोवा | 40 | 1 | – | 1 | – |
| गुजरात | 182 | 13 | 26 | 13 | 27 |

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 124



## तालिका-2 जारी

| राज्य | सीटों की संख्या | परिसीमन से पहले | | परिसीमन के बाद | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | अनुसूचित जाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जाति की आरक्षित सीटें | अनुसूचित जनजाति की आरक्षित सीटें |
| हरियाणा | 90 | 17 | – | 17 | 0 |
| हिमाचल प्रदेश | 68 | 16 | 3 | 17 | 3 |
| जम्मू-कश्मीर | 87 | 7 | 0 | 7 | 0 |
| झारखण्ड | 81 | 9 | 28 | 9 | 28 |
| कर्नाटक | 224 | 33 | 2 | 36 | 15 |
| केरल | 140 | 13 | 1 | 14 | 2 |
| मध्य प्रदेश | 230 | 34 | 41 | 35 | 47 |
| महाराष्ट्र | 288 | 18 | 22 | 28 | 25 |
| मणिपुर | 60 | 1 | 19 | 1 | 19 |
| मेघालय | 60 | – | 55 | | 55 |
| मिज़ोरम | 40 | – | 39 | – | 39 |
| नगालैण्ड | 60 | – | 59 | | 59 |
| ओडीशा | 147 | 22 | 34 | 24 | 33 |
| पंजाब | 117 | 29 | 0 | 34 | 0 |
| राजस्थान | 200 | 33 | 24 | 34 | 25 |
| सिक्किम | 32 | 2 | 12 | 2 | 12 |
| तमिलनाडु | 234 | 42 | 3 | 44 | 2 |
| त्रिपुरा | 60 | 7 | 20 | 0 | 20 |
| उत्तराखण्ड | 70 | 12 | 3 | 13 | 2 |
| उत्तर प्रदेश | 403 | 89 | – | 85 | – |
| पश्चिम बंगाल | 210 | 59 | 17 | 68 | 16 |
| दिल्ली | 70 | 13 | 0 | 12 | 0 |
| पुडुचेरी | 30 | 5 | – | 5 | – |
| **कुल सीटें** | **4036** | **571** | **532** | **613** | **554** |

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 125



## तालिका-3

2009 के लोकसभा चुनाव में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों पर दलों का प्रदर्शन

| जोन | कुल सीटें | मतदान | कांग्रेस | | भाजपा | | वामपंथी | | बसपा | | अन्य पार्टियाँ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट |
| पूर्वोतर | 1 | 64.1 | 1 | 37.9 | 0 | 21.7 | 0 | 0.0 | 0 | 0.0 | 0 | 40.4 |
| पूर्व | 21 | 65.4 | 1 | 16.2 | 7 | 8.4 | 7 | 29.9 | 0 | 3.2 | 11 | 42.4 |
| उत्तर | 30 | 50.2 | 11 | 26.8 | 0 | 20.7 | 0 | 0.3 | 2 | 19.9 | 12 | 33.1 |
| पश्चिम | 11 | 47.8 | 6 | 37.1 | 0 | 30.6 | 0 | 0.8 | 0 | 4.3 | 2 | 27.1 |
| दक्षिण | 21 | 69.3 | 11 | 31.0 | 2 | 11.0 | 2 | 7.3 | 0 | 1.3 | 6 | 49.4 |

## तालिका-4

2004 के लोकसभा चुनाव में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों पर दलों का प्रदर्शन

| जोन | कुल सीटें | मतदान | कांग्रेस | | भाजपा | | वामपंथी | | बसपा | | अन्य पाटियाँ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट |
| पूर्वोत्तर | 1 | 68.6 | 1 | 47.8 | 0 | 34.1 | 0 | 0.0 | 0 | 0.0 | 0 | 18.1 |
| पूरब | 21 | 65.8 | 1 | 15.4 | 3 | 17.2 | 9 | 24.3 | 0 | 3.0 | 8 | 40.1 |
| उत्तर | 29 | 48.2 | 5 | 19.5 | 7 | 24.2 | 0 | 1.5 | 5 | 20.7 | 12 | 34.0 |
| पश्चिम | 9 | 50.6 | 0 | 33.1 | 6 | 35.7 | 0 | 0.4 | 0 | 2.6 | 3 | 28.1 |
| दक्षिण | 19 | 67.9 | 7 | 31.0 | 2 | 12.7 | 0 | 7.0 | 0 | 1.7 | 7 | 47.7 |

**दोनों तालिकाओं का स्रोत :** सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

**तालिका-5 :** अनुसूचित जाति का मतदान-पैटर्न : 1971-2009

| चुनाव वर्ष | कांग्रेस | भाजपा | वामपंथी | बसपा | अन्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1971 | 46 | 10 | 17 | - | 27 |
| 1996 | 34 | 14 | 11 | 7 | 34 |
| 1998 | 28 | 14 | 4 | 23 | 31 |
| 1999 | 30 | 14 | 11 | 18 | 27 |
| 2014 | 27 | 13 | 10 | 19 | 29 |
| 2009 | 27 | 12 | 11 | 20 | 30 |
| 2014 | 29 | 22 | 7 | 9 | 33 |

**नोट :** सभी आँकड़े प्रतिशत में. **स्रोत :** सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 126



## तालिका-6

2009 के लोकसभा चुनाव में अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीटों पर दलों का प्रदर्शन

| जोन | कुल सीटें | मतदान | कांग्रेस | | भाजपा | | वामपंथी | | बसपा | | अन्य पार्टियाँ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट |
| पूर्वोत्तर | 7 | 71.8 | 4 | 32.0 | 0 | 5.4 | 1 | 12.5 | 0 | 0.0 | 2 | 50.1 |
| पश्चिम | 8 | 54.2 | 6 | 42.1 | 1 | 32.5 | 0 | 1.4 | 0 | 2.4 | 1 | 21.7 |
| केंद्रीय | 29 | 60.1 | 10 | 30.1 | 10 | 29.1 | 2 | 8.9 | 0 | 2.9 | 7 | 29.0 |
| शेष भारत | 3 | 54.4 | 0 | 44.5 | 3 | 46.6 | 0 | 0.0 | 0 | 1.7 | 0 | 7.2 |

## तालिका-7

2004 के लोकसभा चुनाव में अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीटों पर दलों का प्रदर्शन

| जोन | कुल सीटें | मतदान | कांग्रेस | | भाजपा | | वामपंथी | | बसपा | | अन्य पार्टियाँ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | वोट | जीत | जीत |
| पूर्वोत्तर | 5 | 72.6 | 1 | 8.9 | 0 | 10.4 | 1 | 14.0 | 0 | 0.0 | 33 | 66.6 |
| पश्चिम | 8 | 50.2 | 44 | 47.0 | 3 | 39.4 | 0 | 1.1 | 0 | 2.2 | 1 | 10.2 |
| केंद्रीय | 27 | 55.9 | 88 | 31.2 | 12 | 32.9 | 3 | 9.0 | 0 | 3.6 | 4 | 23.2 |
| शेष भारत | 1 | 69.0 | 00 | 25.7 | 0 | 15.6 | 0 | 1.4 | 0 | 0.9 | 1 | 56.5 |

**दोनों तालिकाओं का स्रोत :** सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

राज्यों में दलीय होड़ की प्रकृति में में हुए परिवर्तन के कारण हर राज्य में विशिष्ट प्रकार की राजनीति पैदा हुई है और हर राज्य ने अपनी प्रतिस्पर्धात्मक राजनीति की भाषा के विकास के लिए अपना अलग ही रास्ता चुना है। इसके अलावा राज्य की आबादी के विन्यास में अंतर कई कारकों में से एक हो सकता है। दलित वोटों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि चुनावी रसोई में जो भी व्यंजन उपलब्ध होता है मतदाता उसी में से चयन करता है और प्रतिस्पर्धात्मक राजनीति विकल्प और सम्भावनाओं के द्वार खोलती और बंद करती है। यह बात एकदम साफ़ है कि जिन राज्यों में वामपंथी दलों की राजनीति मतदाताओं के लिए विकल्प के तौर पर है वहाँ के दलित मतदाता उन्हें चुनते हैं। त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल और केरल में वामपंथी दलों को दलित वोटों का बड़ा हिस्सा प्राप्त होता है। जिन राज्यों में भाजपा कांग्रेस की अकेली विकल्प के तौर पर होती है उन राज्यों में कांग्रेस को दलितों को पूरा समर्थन मिलता है। जिन राज्यों में एक मज़बूत क्षेत्रीय दल होता है वहाँ कांग्रेस और दूसरे क्षेत्रीय दलों के बीच दलितों के वोट बँट जाते हैं। उन दलों में तमिलनाडु में अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम (अन्ना द्रमुक), आंध्र प्रदेश की तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) और ओडीशा के बीजू जनता दल (बीजद) जैसी पार्टियाँ शामिल हैं। अगर हम दलीय होड़ के लिए राज्यों की प्रकृति

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 127



**तालिका-8 :** अनुसूचित जाति का राज्यवार मतदान-पैटर्न : राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन-2009

| राज्य | प्रमुख अ. जा. | कांग्रेस | भाजपा | क्षेत्रीय दल | सैम्पल |
|---|---|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | माडिगा | 41 | 1 | तेदेपा-53, अन्य-5 | 179 |
| | माला | 47 | 1 | तेदेपा-24, अन्य-28 | 146 |
| | अन्य अ.जा. | 43 | 2 | तेदेपा-31. अन्य -24 | 101 |
| | पूरे राज्य में | 39 | 4 | तेदेपा-34, अन्य-23 | 2357 |
| असम | सारे अ.जा. | 42 | 26 | अगप-14, अन्य-18 | 128 |
| | पूरे राज्य में | 35 | 16 | अगप-15. अन्य-34 | 1202 |
| बिहार | जाटव | 5 | 8 | जद (एकी)-17, राजद-12, अन्य-58 | 100 |
| | पासी | 5 | 9 | जद (एकी)-18, राजद-29, अन्य-39 | 93 |
| | अन्य अ.जा. | 8 | 16 | जद (एकी)-16, राजद-8, अन्य-52 | 145 |
| | पूरे राज्य में | 10 | 14 | जद (एकी)-24, राजद-19, अन्य-33 | 1567 |
| छत्तीसगढ़ | सभी अ.जा. | 41 | 31 | बसपा-26 | 58 |
| | पूरे राज्य में | 37 | 45 | बसपा-5, अन्य-13 | 468 |
| गुजरात | सभी अ.जा. | 65 | 21 | बसपा-9, अन्य दल-6 | 71 |
| | पूरे राज्य में | 43 | 47 | अन्य दल-10 | 955 |
| हिमाचल प्रदेश | सभी अ.जा. | 54 | 38 | अन्य दल-8 | 144 |
| | पूरे राज्य में | 46 | 50 | अन्य दल-4 | 645 |
| हरियाणा | जाटव | 28 | 4 | बसपा-68, अन्य दल-0 | 83 |
| | अन्य अ.जा. | 62 | 9 | बसपा-16, अन्य दल-13 | 45 |
| | पूरे राज्य में | 42 | 12 | बसपा-16, अन्य दल-30 | 529 |
| झारखण्ड | सभी अ.जा. | 19 | 18 | झामुमो-11, झाविमो-9, अन्य दल-43 | 79 |
| | पूरे राज्य में | 15 | 28 | झामुमो-12, झाविमो-11, अन्य दल-34 | 624 |
| कर्नाटक | मादिगा | 62 | 25 | जद (सेकु)-10, अन्य दल-3 | 81 |
| | आदि कर्नाटक | 52 | 22 | जद (सेकु)-10, अन्य दल-16 | 95 |
| | भूवि | 43 | 43 | जद (सेकु)-8, अन्य दल-6 | 53 |
| | अन्य अ.जा. | 38 | 40 | जद (सेकु)-9, अन्य दल-0 | 166 |
| | पूरे राज्य में | 38 | 42 | जद (सेकु)-14, अन्य दल-6 | 1941 |
| मध्य प्रदेश | जाटव | 48 | 23 | बसपा-26, अन्य दल-3 | 124 |
| | अन्य अ.जा. | 28 | 50 | बसपा-5. अन्य दल-17 | 111 |
| | पूरे राज्य में | 40 | 43 | बसपा-6, अन्य दल-11 | 1199 |
| केरल | सभी अ.जा. | 20 | 3 | वाजमो-74, अन्य दल-0 | 70 |
| | पूरे राज्य में | 48 | 6 | वाजमो-42, अन्य दल-0 | 651 |

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 128



## तालिका-8 जारी

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| महाराष्ट्र | महार | 21 | 10 | बसपा-35, अन्य-34 | 141 |
| | सभी अ.जा. | 19 | 7 | बसपा-13, अन्य-61 | 155 |
| | पूरे राज्य में | 20 | 18 | बसपा-5, राकांपा-21, अन्य दल-36 | 1934 |
| ओडीशा | पानो | 37 | 15 | बीजद-41, अन्य दल-7 | 49 |
| | केवट | 46 | 12 | बीजद-37, अन्य -5 | 56 |
| | अन्य अ.जा. | 55 | 11 | बीजद-34, अन्य-0 | 44 |
| | पूरे राज्य में | 33 | 17 | बीजद-37, अन्य-13 | 1010 |
| पंजाब | सभी अ.जा. | 45 | 9 | शिअद-22, बसपा-17, अन्य-2 | 264 |
| | पूरे राज्य में | 45 | 10 | शिअद-35, बसपा-6, अन्य दल-4 | 843 |
| राजस्थान | जाटव | 64 | 20 | बसपा-11, अन्य दल-5 | 159 |
| | अन्य अ.जा. | 80 | 20 | बसपा-0, अन्य दल-0 | 50 |
| | पूरे राज्य में | 47 | 37 | बसपा-3, अन्य दल-13 | 922 |
| तमिलनाडु | मादिगा | 21 | - | अन्नाद्रमुक-26, द्रमुक-20, अन्य दल-38 | 295 |
| | माला | 12 | - | अन्ना द्रमुक-23, द्रमुक-27, अन्य दल-38 | 75 |
| | अन्य अ.जा. | 16 | - | अन्ना द्रमुक-16, द्रमुक-40, अन्य दल-28 | 116 |
| | पूरे राज्य में | 16 | - | अन्ना द्रमुक-25, द्रमुक-27, अन्य दल-32 | 2315 |
| त्रिपुरा | राजबंशी | 31 | 3 | वामपंथी-64, अन्य दल-2 | 59 |
| | नामशूद्र | 19 | 3 | वामपंथी-78, अन्य दल-0 | 63 |
| | अन्य अ.जा. | 24 | 0 | वामपंथी-73, अन्य दल-3 | 71 |
| | औसत | 31 | 3 | वामपंथी-62, अन्य दल-4 | 737 |
| उत्तर प्रदेश | जाटव | 4 | 5 | बसपा-85, सपा-2, अन्य दल-1 | 288 |
| | पासी | 20 | 20 | बसपा-68, सपा-2, अन्य दल-0 | 41 |
| | अन्य अ.जा. | 17 | 12 | बसपा-54, सपा-17, अन्य दल-0 | 95 |
| | पूरे राज्य में | 18 | 22 | बसपा-27, सपा-23, अन्य दल-10 | 2203 |
| उत्तराखण्ड | सभी अ.जा. | 43 | 21 | बसपा-27, अन्य दल-9 | 132 |
| | पूरे राज्य में | 43 | 34 | बसपा-15, अन्य दल-8 | 627 |
| पश्चिम बंगाल | राजबंसी | 9 | 7 | तृण मूल-20, वाम दल-57, अन्य दल-7 | 77 |
| | नामशूद्र | 4 | 10 | तृण मूल-18, वाम दल-44, अन्य दल-24 | 126 |
| | अन्य अ.जा. | 4 | 8 | तृण मूल-21, वाम दल-54, अन्य दल-3 | 214 |
| | पूरे राज्य में | 18 | 6 | तृण मूल-26, वाम दल-43, अन्य दल-7 | 1702 |

**नोट :** जिन राज्यों में सैम्पल सौ से कम का था, उन्हें इस विश्लेषण में शामिल नहीं किया गया है।
**स्रोत :** राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन (एनईएस)-2009.

पर विचार करें तो इसे इस प्रकार देखा जा सकता है : जिन राज्यों में कांग्रेस का मुक़ाबला भाजपा की नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठजोड़ (राजग) की संयुक्त ताक़त से है वहाँ दलित मतदाता समान अनुपात में दोनों राजनीतिक दलों को समर्थन देते दिखायी देते हैं। उत्तर प्रदेश में दलित वोटों पर बसपा का पूरी तरह एकाधिकार है। बसपा ने हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तराखण्ड और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में दलित वोटों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन-2009 के आँकड़े बताते हैं कि इन राज्यों में बसपा का दलित वोटों पर दबदबा था। इन राज्यों में क़रीब 60 प्रतिशत दलित बसपा के लिए वोट करते नज़र आये। कुछ राज्यों में राजनीतिक दल दलित वोटों को उनके भीतर के जातिगत विभाजन के आधार पर लामबंद करते हैं। इस मामले में पंजाब एक अच्छा उदाहरण है, जहाँ हिंदू दलित वोट कांग्रेस के लिए वोट करते हैं जबकि सिख दलित वोट अकाली-भाजपा गठबंधन के लिए। महाराष्ट्र में महार, मातंग और बौद्ध दलित अलग तरह से वोट देते हैं। उत्तर प्रदेश में जितनी संख्या में जाटव बिरादरी के लोग बसपा का समर्थन करते हैं उस अनुपात में दूसरी दलित जातियाँ नहीं करतीं (राज्य स्तरीय पैटर्न के लिए देखें तालिका-8)। इन तर्कों को आगे बढ़ाते हुए यह महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाला जा सकता है दलितों के किसी विशेष राजनीतिक पार्टी को एकमुश्त वोट देने की धारणा एक मिथक से ज़्यादा कुछ नहीं है। वास्तव में उनका वोट देने का निर्णय उनके सामने उपलब्ध विकल्पों पर निर्भर करता है। उनका मतदान प्रारूप अन्य समुदायों की तरह ही विखण्डित है।

*झारखण्ड के प्रमुख आदिवासी नेता शिबू सोरेन*

## अनुसूचित जनजाति के मतदान का पैटर्न

देश के कुछ हिस्सों में मुख्य रूप से बसी अनुसूचित जनजातिया पारम्परिक रूप से कांग्रेस को वोट देती रही हैं और आज भी यह समुदाय राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस को ही ज़्यादा वोट देता है। यहाँ तक कि राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा को महत्त्वपूर्ण जगह देने वाले स्वर्णिम चुनावों में भी यह पार्टी अनुसूचित जनजाति के वोटों में सेंध नहीं लगा सकी। अनुसूचित जनजाति के वोटों का बड़ा हिस्सा कांग्रेस के साथ ही रहा। 2009 के लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस को अनुसूचित जनजाति के कुल वोटों का बड़ा यानी 38 फ़ीसदी हिस्सा मिला (तालिका-9)। हालाँकि राज्य के स्तर पर हम अलग-अलग राज्यों से अलग-अलग स्थितियाँ देखते हैं, पर अनुसूचित जनजाति की मतदान पद्धति तीन श्रेणियों में बाँट कर देखी जा सकती है। पहली श्रेणी उन राज्यों की है जहाँ पर 2009 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को अनुसूचित जनजाति के लोगों के अधिकतम वोट मिले— जैसे आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक और महाराष्ट्र। इन राज्यों के अलावा कांग्रेस को मिजोरम और राजस्थान में अनुसूचित जनजाति के अधिकतम वोट मिले लेकिन यहाँ आदिवासी समुदाय के एक तबक़े ने अलग तरह से मतदान किया। उदाहरण के लिए मिज़ोरम के ईसाई आदिवासियों ने और राजस्थान के मीणा समुदाय ने अन्य क्षेत्रीय

**तालिका-9 :** अनुसूचित जनजाति का मतदान-पैटर्न : 1971-2009

| चुनाव वर्ष | कांग्रेस | भाजपा | वामपंथी | बसपा | अन्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1971 | 48 | 5 | 9 | - | 38 |
| 1996 | 42 | 21 | 12 | 1 | 24 |
| 1998 | 32 | 21 | 10 | 0 | 37 |
| 1999 | 46 | 22 | 9 | 0 | 23 |
| 2004 | 37 | 28 | 7 | 1 | 27 |
| 2009 | 38 | 24 | 7 | 1 | 30 |
| 2014 | 41 | 36 | 3 | 0 | 20 |

**नोट :** सभी आँकड़े प्रतिशत में. **स्रोत :** सी.एस.डी.एस. आँकड़ा एकांश.

दलों को वोट दिया। अन्यथा पूरी आदिवासी बिरादरी ने बड़े पैमाने पर कांग्रेस को ही वोट दिया। दूसरी श्रेणी उन राज्यों की है जहाँ अन्य क्षेत्रीय दलों ने कांग्रेस पार्टी को धकिया कर अनुसूचित जनजाति के ज़्यादातर वोट हासिल कर लिए। इस श्रेणी में हम असम, झारखण्ड, मणिपुर, मेघालय, सिक्किम, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य हैं। ये ऐसे राज्य हैं जहाँ पर अनुसूचित जनजातियों की अधिकतम आबादी रहती है। तीसरी श्रेणी उन राज्यों की है जहाँ पर अनुसूचित जनजाति की राजनीतिक प्राथमिकताएँ अलग-अलग होती हैं। इस श्रेणी के राज्यों में अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश शामिल हैं। उदाहरण के लिए अरुणाचल प्रदेश में आदि और न्येशी जैसे दो प्रमुख आदिवासी समुदाय हैं और वे अन्य आदिवासी समुदायों की तुलना में अलग तरह से वोट देते हैं। 2009 के लोकसभा चुनावों में इन दोनों आदिवासी समुदायों ने बड़े पैमाने पर भाजपा को वोट दिया। जबकि दूसरे आदिवासी समूहों ने कांग्रेस को वोट दिया। इसी तरह छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में गोंड और राजगोंड जैसे प्रमुख आदिवासी समूहों ने बाक़ी आदिवासी समुदायों के मुक़ाबले अलग तरह से वोट दिया जो बड़ी संख्या में भाजपा के खाते में गया। (तालिका-10)

## 2014 के चुनाव में?

क्या आदिवासियों मतदान-व्यवहार में बदलाव की सम्भावना है? तमाम वजहों से 2014 का लोकसभा चुनाव सर्वाधिक चर्चित चुनाव है। कई लोगों का दावा है कि इस चुनाव में जनता जाति के दायरे को तोड़ कर मतदान करेगी और मतदान के समय स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों को ध्यान में रखेगी। नेतृत्व भी जनता की राजनीतिक प्राथमिकता तय करेगा। इस तरह की धारणा हमें यह जाँच करने को प्रेरित करती है कि क्या चुनाव के दौरान जाति दरकिनार हो जाएगी या पहले के चुनावों की तरह जाति अपनी भूमिका निभायेगी। हाल में हुए विधानसभा चुनावों में बहुजन समाज पार्टी के लिए एक बड़ा झटका उस समय देखा गया जब उसकी लोकप्रियता घटी और उसके वोटों का प्रतिशत तेज़ी से गिरा। इसकी जाँच करने के लिए हमने सी.एस.डी.एस. की तरफ़ से जुटाये गये ट्रैकर पोल के आँकड़ों की मदद ले कर यह ख़ाका खींचने की कोशिश की कि आगामी लोकसभा चुनावों में अनुसूचित जाति और जनजाति किस तरह से मतदान करेगी। दिलचस्प बात है कि हमने अनुसूचित जाति और जनजाति की मतदान पद्धति और उनकी राजनीतिक प्राथमिकता में कुछ बदलाव देखा। गुजरात, हरियाणा, राजस्थान और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की अनुसूचित जातियों की मतदान पद्धति में परिवर्तन देखा गया। उदाहरण के लिए 68 प्रतिशत जाटवों ने 2009 के चुनावों में बसपा के लिए मतदान किया था लेकिन 2014 के लोकसभा चुनावों के लिए किये गये ट्रैकर पोल के दौरान महज़ 15 प्रतिशत जाटवों

10_rahul_jyoti_Layout 1 5/1/2014 6:14 PM Page 131



**तालिका-10 :** अनुसूचित जनजाति का मतदान-पैटर्न : 1971-2009

| राज्य | प्रमुख अ. जन. | कांग्रेस | भाजपा | क्षेत्रीय दल | सैम्पल |
|---|---|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | लंबाडी, सुगाली | 51 | 7 | तेदेपा-37, अन्य दल-5 | 76 |
| | अन्य अ. जन. | 52 | 0 | तेदेपा-32, अन्य दल-16 | 65 |
| | बोडो | 37 | 7 | अगप-3, अन्य दल-53 | 106 |
| | अन्य अ. जन. | 32 | 14 | अगप-18, अन्य दल-36 | 76 |
| अरुणाचल प्रदेश | आदि | 32 | 66 | एआरसी-0, अन्य-2 | 76 |
| | नीशी | 41 | 57 | एआरसी-0, अन्य-2 | 68 |
| | अन्य अ. जन. | 60 | 17 | एआरसी-22, अन्य दल-1 | 126 |
| छत्तीसगढ़ | गोंड/राजगोंड | 38 | 43 | अन्य दल-19 | 129 |
| | | 53 | 36 | अन्य दल-11 | 70 |
| गुजरात | भील | 68 | 26 | अन्य दल-6 | 66 |
| | अन्य अ. जन. | 47 | 44 | अन्य दल-9 | 98 |
| झारखण्ड | ओराँव | 16 | 14 | झामुमो-0, झाविमो-0, अन्य दल-70 | 39 |
| | संथाल | 5 | 13 | झामुमो-41, झाविमो-31, अन्य दल-10 | 39 |
| | हो | 20 | 5 | झामुमो-0, झाविमो-0,अन्य दल-75 | 48 |
| | अन्य अ. जन. | 18 | 43 | झामुमो-20, झामुमो-0, अन्य दल-14 | 56 |
| कर्नाटक | नाइकडा | 44 | 37 | जद (सेकु)-11, अन्य दल-8 | 91 |
| | अन्य अ. जन. | 40 | 36 | जद (सेकु)-15, अन्य दल-9 | 99 |
| मध्य प्रदेश | गोंड/राजगोंड | 39 | 47 | अन्य दल-14 | 199 |
| | अन्य अ. जन. | 56 | 36 | अन्य दल-8 | 141 |
| महाराष्ट्र | सभी अ. जन. | 49 | 16 | अन्य दल-35 | 241 |
| मणिपुर | सभी अ. जन. | 31 | 21 | अन्य दल-48 | 164 |
| मेघालय | खासी | 45 | - | राकांपा-1, यूडीपी-17, एचएसपीडी-24, अन्य -13 | 240 |
| | गारो | 30 | - | राकांपा-62, यूडीपी-1, एचएसपीडी-0, अन्य-7 | 136 |
| | जैंतिया | 62 | - | राकांपा-0, यूडीपी-36, एचएसपीडी-0, अन्य-2 | 50 |
| | अन्य अ. जन. | 71 | - | अन्य दल-29 | 112 |
| नगालैण्ड | अंगामी | 13 | | एनपीएफ-87 | 126 |
| | कोन्याक | 40 | | एनपीएफ-60 | 73 |
| | सूमी | 46 | | एनपीएफ-54 | 83 |
| | अन्य अ. जन. | 29 | | एनपीएफ-71 | 189 |
| ओडीशा | सभी अ. जन. | 47 | 25 | बीजद-26, अन्य-2 | 154 |
| राजस्थान | मीणा | 39 | 11 | अन्य दल-50 | 66 |
| | अन्य अ. जन. | 74 | 26 | अन्य-0 | 54 |

**तालिका-10 :** जारी

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सिक्किम | अ. जन. | 45 | 1 | एसडीएफ-51 | 95 |
| त्रिपुरा | त्रिपुरी | 30 | 0 | वामपंथी-67, अन्य-3 | 104 |
| | अन्य अ. जन. | 48 | 3 | वामपंथी-47, अन्य दल-2 | 116 |
| प. बंगाल | सभी अ. जन. | 17 | 7 | तृण मूल-12, वामपंथ-47, अन्य-17 | 115 |

की पसंद बसपा थी। गुजरात और राजस्थान में 2009 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को अनुसूचित जातियों के वोट बड़ी संख्या में मिले, लेकिन 2014 के चुनावों के लिए विपरीत रुझान देखा गया। इन चुनावों में अनुसूचित जाति के मतदाताओं ने कांग्रेस के मुक़ाबले भाजपा को ज़्यादा पसंद किया। पश्चिम बंगाल में वामपंथियों को अनुसूचित जातियों के काफ़ी वोट मिलते थे, लेकिन 2014 के आगामी लोकसभा चुनावों के लिए यह समुदाय तृण मूल कांग्रेस को पसंद कर रहा है। दूसरी तरफ़ अनुसूचित जनजाति की मतदान प्रवृत्ति में भी बदलाव देखा गया। कर्नाटक, मध्य प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में जहाँ 2009 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस ने अनुसूचित जनजातियों के वोट बटोरे थे वहीं अब भाजपा आदिवासी समुदायों में सेंध लगा रही है। 2014 के आगामी लोकसभा चुनावों के लिए यह समुदाय उसे पसंद कर रहा है।

कुल मिला कर हम कह सकते हैं कि अनुसूचित जाति और जनजाति अपने में कोई समरूप समूह नहीं है बल्कि वे अलग-अलग तरह से वोट देते हैं और विभिन्न राज्यों में अलग-अलग राजनीतिक दलों को पसंद करते हैं। एनईएस की टाइम सीरीज के आँकड़ों का विश्लेषण बताता है कि अनुसूचित जाति और जनजाति के मतदाताओं के मतदान प्रारूप में बदलाव हो रहा है। पहले यह समुदाय कांग्रेस पार्टी को पसंद करते थे लेकिन राज्य की राजनीति के उभार के साथ और पार्टी प्रणाली के क्षेत्रीयकरण के साथ तमाम विकल्प उठ खड़े हुए हैं। इस राजनीतिक विकल्प ने दरअसल अनुसूचित जाति और जनजाति के समुदायों को राजनीतिक प्राथमिकता बदलने पर मजबूर किया है।

## संदर्भ

अमित आहूजा और प्रदीप छिब्बर (2012), 'व्हाई द पूअर वोट इन इण्डिया : इफ़ आई डोंट वोट, आई एम डेड टू द स्टेट, *स्टडीज़ इन कम्पैरेटिव इंटरनैशनल डिवेलपमेंट,* खण्ड 47, अंक 4.

आर भेगड़ा, सी.आर .विजोय और अन्य (1999), *द आदिवासीज़ ऑफ़ इण्डिया,* माइनारिटी राइट्स ग्रुप इंटरनैशनल, लंदन.

दिव्या वैद (2009), 'इलेक्टोरल पार्टिसिपेशन अमंग आदिवासी कम्युनिटी', *इकॉनमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

योगेंद्र यादव (2000), 'अंडरस्टैंडिंग द सेकण्ड डेमॉक्रैटिक अपसर्ज' फ्रैंसाइन आर, फ्रैंकेल और अन्य (सम्पा.), 'ट्रांसफ़ार्मिंग इण्डिया : सोशल ऐंड पॉलिटिकल डायनामिक्स ऑफ़ डेमॉक्रैसी, आक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

योगेंद्र यादव और सुहास पलशीकर (2009), 'बिटवीन फ़ोर्च्यून ऐंड वर्चू : एक्सप्लेनिंग कांग्रेसेज़ एंबीगुअस विक्ट्री इन 2009', *इकॉनमिक ऐंड पालिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

रामचंद्र गुहा (2007), 'आदिवासीज़, नक्सलाइट्स ऐंड इण्डियन डेमॉक्रैसी', *इकॉनमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 42, अंक 32.

राहुल वर्मा (2009), 'दलित वोटिंग पैटर्न', *इकॉनमिक ऐंड पालिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.

संजय कुमार (2009), 'पैटर्नस ऑफ़ पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन : ट्रेंड्स ऐंड पर्सपेक्टिव', *इकॉनमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 44, अंक 39.